वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च – 2022

- ❖ मनुष्य के लिए परम आवश्यक और महान अधिकार
  - ❖ धर्म का वैज्ञानिक आधार आवश्यक है।
    - ❖ अमानत के पैसे मैं रख नहीं सकता।
- ❖ मनुष्य के लिए एक मात्र सच्चा धर्म कौन सा है?
  - ❖ देव समाज का अनमोल सम्बन्ध
    - ❖ देव समाज का मैम्बर होने व रहने के लाभ.....
- ❖ आत्म – अन्धकार
  - ❖ मल्लेका सिरसा में सत्संग
    - ❖ भाव प्रकाश

आत्मिक रोग

आत्मिक रोग जो हृदय की भूमि को खराब और अयोग्य बना देते हैं, वह ऐसे रोग हैं जो आत्मा के भीतर अधिकार प्राप्त करके उसके बल-प्राण अर्थात् Vitality को घटाते जाते हैं। यहां तक कि जब कोई ऐसी आत्मा सौभाग्य से आत्म विकासक धर्म दाता सदगुरू की शरण में आ भी जाता है तब भी वह उनकी कृपा से इतना लाभ नहीं उठा सकता जितना उन रोगों से बचा हुआ कोई दूसरा जन लाभ उठा सकता है और आगे बढ़ सकता है। इस प्रकार के सब रोगों की जड़ स्वार्थ या "मैं" का जाप है और जितना किसी आत्मा में इस "मैं" का अधिकार बढ़ता जाता है, उतना ही न केवल यह कि वह जीवन ज्योति और शक्ति के भण्डार जीवन दाता श्री देव गुरू भगवान् को अपने दिल पर अधिकार देने के अयोग्य हो जाता है बल्कि धीरे-धीरे वह अपनी एक या दूसरी रुचि या वासना और उसके विषय का इस कदर बन्धुवा होता जाता है कि फिर चाह कर भी वह कई बार उसकी गुलामी से निकलना और सच्ची स्वतन्त्रता या मोक्ष पाना अत्यन्त कठिन अनुभव करता है और मानों वह इस क़दर दुर्बल और कमज़ोर हो जाता है कि यद्यपि उसकी अपनी आँखों के सामने उसकी एक-एक रुचि उसका नाश करती रहती है, उसका शरीर तबाह होता जाता है, उसकी आन्तरिक शान्ति नष्ट होती जाती है, उसके नाना सम्बन्ध खराब और कड़वे होते जाते हैं और उसका जीवन तलख़ और दुःखों का घर बनता जाता है, तो भी वह अपने कष्ट के सामने इतना दुर्बल और बेबस हो जाता है कि उसके असर से छुटकारा नहीं पा सकता और जैसे बयान किया जाता है कि एक-एक मेंढ़क और छिपकली के लिए कई बार घातक सांपों की आँखों के मुकाबिल में आ जाने पर वहाँ से हिलना मुश्किल हो जाता है और यद्यपि वह यह जानते है कि निश्चय मृत्यु के मुंह में जा रहे हैं तो भी वह सांप के आगे से भाग नहीं सकते, और अन्त में इस अपने जानी दुश्मन के हवाले हो जाते हैं, वैसे ही एक-एक नीच विषयों में आसक्त और उनके दास जन का भी हाल होता है कि वह अपने आत्मा के वशीभूत करने वाले एक-एक बढ़े हुए अपनत्व के अंग के अधिकार से हटने का साहस नहीं कर सकता और अपने आप को उसके हानिकारक प्रभाव से नहीं बचा सकता।

स्वार्थ या "मैं" का जाप आत्मा को किस तरह पर ऐसी अवस्था में पहुँचा देता है, इसका अध्ययन कुछ कम शिक्षाप्रद नहीं है। यूं तो बचपन से ही मनुष्य के भीतर जो जाप आरम्भ होता है, वह "मैं" का जाप है। बच्चा कुछ भी होश संभालने पर जो कुछ चाहता और सोचता है, वह उसका अपना आराम या अपनी भूख का निवारण करना है। और ज़रा बड़ा होने पर यदि यह मां को चाहता है तो इसलिए कि वह उसके काम आ जाए। वह उसे खिलाये, पिलाये, हँसाए और इसका लालन-पालन करे। इसी प्रकार अपने मान और यश का भूखा व्यक्ति एक और जहाँ किसी ऐसी भलाई या सच्चाई का अनुगामी नहीं बन सकता कि जिससे उसे बदनामी या अपमान प्राप्त होने की आशंका हो, वहाँ उसे अपने दोष को छिपाने और विशेषता को प्रगट करने की आकांक्षा हो वह यत्न करेगा और यथाअवसर अपने दोष को भी अपनी विशेषता प्रगट करना चाहेगा और जो लोग उसकी झूठ-मूठ भी प्रशंसा करते रहते हों उसे अपना मित्र और जो उसकी सचमुच की खराबियों या दोषों को उस पर प्रगट करते हैं, और उसका प्रकृत हित चाहते हों, उन्हें अपना शत्रु या कम से कम एक अप्रिय सम्बन्धी स्वीकार करेगा। हमारा ऐसा अस्तित्त्व किस क़दर भयानक अस्तित्त्व!! परन्तु धन्य हैं वह जीवन दाता श्री देव गुरु भगवान्, कि जो हमारा ऐसी अवस्था में भी कल्याण साधान करने का यत्न करते हैं और ऐसे आत्माओं से ऐसा सलूक पा कर भी अपने भीतर सदा यह शुभ कामना रखते हैं कि अवसर पड़ने पर मुड़-मुड़कर भी इनका हित साधन कर सकें और कुछ भी अभिलाषा या गुंजायश होने पर अपनी ज्योति और शक्ति ऐसे आत्माओं तक पहुँचा कर उनका हित साधन कर सकें। धन्य हैं ऐसे जीवनदाता, धन्य हैं ऐसे ज्योति दाता, धन्य हैं ऐसे परम हितकर्ता। सचमुच उनका ऐसा ही लासानी, परहित अनुराग भाव नीच से नीच आत्माओं को नीचता को दमन करने और उनके नीच रूप को बदल कर उनमें उच्च जीवन और उच्च भाव पैदा करने की विस्मयजनक करामातें कर रहा है और मनुष्य-मात्र के परम हितसाधन का द्वारा खोल रहा है।

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 3
मार्च – 2022
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य के लिए परम आवश्यक और महान अधिकार

मनुष्य जन्म पाकर, मनुष्य शरीर धारण करके अपने से निचली सब श्रेणियों से सभ्य श्रेणी का जीव कहला कर मनुष्य के लिए जो प्रथम सर्वोच्च अधिकार है और जो सबसे आवश्यक अधिकार है, वह आत्म बोध प्राप्त करने का अधिकार है। आत्म बोध जब तक मनुष्य को प्राप्त न हो, तब तक वह मनुष्य जन्म लेकर भी, ऐसी उच्च श्रेणी का जीव होकर भी नीचे की श्रेणियों के जीवों से निकृष्ट, अत्यन्त गन्दा, मैला, दुखदाई और क्लेशजनक बन जाता है। दरिंदे से दरिंदे जानवर, चीर फाड़कर खा जाने वाले अनेकों जीव कई हालत में उससे अच्छे होते हैं।

आत्म बोध के बिना उसकी ऐसी अवस्था हो जाती है, जिससे वह इतना हानिकारक बन जाता है, जो हानि हिंसक पशु भी नहीं कर सकते, क्योंकि हिंसक पशु केवल शरीरों का नाश करते हैं, वह आत्माओं का नाश नहीं कर सकते, परन्तु आत्म बोध के बिना उनसे भी अधिक हिंसक बन जाता है, जब वह आत्मा के नाश का हेतु बनता है।

मनुष्य जन्म लेकर और ऐसा हिंसक जीवन बनने से बचने के लिए जो पहली शर्त है, वह है आत्म बोध का प्राप्त करना। केवल यह नहीं कि आत्म बोध प्राप्त किए बिना मनुष्य इस संसार के लिए क्लेशदायक और भयानक दुःख देने वाला सिद्ध होता है, और इस दुनिया के लिए हिंसक बनता है, वह अपने अस्तित्त्व के लिए भी खूंखार शत्रु बन जाता है। अपने आत्मा का नाश करने और उसके साथ अपने शरीर का भी नाश करने में सबसे बढ़कर दरिंदा वा हिंसक बनता है। जितनी हानि, जितना क्लेश वह अपने अस्तित्त्व को पहुंचा सकता है, वह और कोई जन उसे नहीं पहुंचा सकता।

अब प्रश्न यह है कि आत्म बोध क्या है जिसको प्राप्त करके मनुष्य सही अर्थों में मनुष्य कहलाने का हक़दार है और जिसे प्राप्त किए बिना वह अपने लिए और इस संसार के लिए महा भयानक दुःखों का उत्पन्नकर्ता बनता है और अपने अस्तित्त्व को ही नष्टभ्रष्ट कर लेता है?

आत्म बोध अपने भीतर की शक्तियों का बोध है। शरीर के भिन्न जो उसके भीतर आत्मा वास करता है, जिसको लेकर ही उसका

अस्तित्त्व है, उसका ज्ञान, आत्मा के भीतर की भाव शक्तियों का ज्ञान, आत्म बोध है। इस ज्ञान की प्राप्ति से मनुष्य को यह पता लगता है कि उसके भीतर परिचालक शक्तियां कौन कौन सी हैं? उसके लिए सही अर्थों में विकासकारी और विनाशकारी हालात क्या हैं? उसके लिए कर्त्तव्य कार्य और वर्जित कर्म कौन से हैं? वह विष को विष के रूप में देखने के योग्य हो जावे, अमृत को अमृत के रूप में देखने की क्षमता प्राप्त कर ले, सांप को सांप के रूप में, बिच्छू को बिच्छू के रूप में देख सके जो वासनाओं और उत्तेजनाओं के रूप में उसके भीतर वर्तमान हैं तो फिर वह नीच रुचियों का अनुचर नहीं रहता, नीच अभ्यासों को त्यागने का मार्ग ढूंढता है। जिन नीच कर्मों में वह रस और खुशी अनुभव करता था, जिन चक्कर और चिन्ताओं में पड़कर जीवन नष्ट करता था, उनके लिए दु:ख और क्लेश अनुभव करता है।

वे आत्मा कितने सौभाग्यशाली हैं जिनके भीतर यह ज्योति प्रवेश कर चुकी है, वह सबसे धनवान हैं जो आत्म बोध को प्राप्त करके विनाशकारी क्या है और विकासकारी क्या है? इसका बोध प्राप्त कर लेते हैं। वह सौभाग्यवान हैं जो विनाशकारी हालातों से मुंह मोड़कर विकासकारी हालातों के अपने आपको हवाले कर देते हैं। ऐसे सम्बन्धियों को ही अपना सच्चा सम्बन्धी अनुभव करते हैं जो विकास की ओर ले जाने में सहायक बन सकें, अपने आपको उनके हवाले करके, उनकी आज्ञा का पालन करके, अपने विषय में बोध प्राप्ति के मार्ग पर पड़ जाते हैं। वे यह अनुभव करते हैं कि इस अधिकार से बढ़कर कोई अधिकार नहीं। ऐसे जन ही सच्चा धर्म प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त करते हैं। नहीं तो करोड़ों मनुष्य मानव जीवन रखकर भी कीड़े मकौड़ों की तरह दुनियां की गन्दगी में लथपथ रहकर नष्ट हो जाते हैं और लक्ष्यभ्रष्ट होकर ही समाप्त हो जाते हैं?

ऐसे आत्म बोध से हीन करोड़ों जन हैं, जिनके पास धन के अम्बार हैं, जो सारी उम्र भी खर्च करते रहें, समाप्त नहीं हो सकते, कई जनों के पास ऐसी विद्या है कि दुनियां की नाजुक से नाजुक समस्याओं को हल करने की क्षमता रखते हैं, वह बड़े बड़े समुद्रों और पहाड़ों को चीर सकते हैं, परन्तु शोक और महा शोक! ये सब क्षमता रखकर भी आत्म बोध के बिना न केवल वे इन सबके द्वारा सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकते बल्कि अनेक जनों, समाजों और देशों के लिए हानिकारक जीव बन जाते हैं, दुख और क्लेश का कारण बनते हैं। अपने किरदारों के द्वारा असंख्य हृदयों को ज़ख़्मी करते हैं और अन्त में इस विश्व से मिट जाते हैं।

नेचर के नियम सच्चे और अटल हैं, उनमें किसी के लिए पक्षपात नहीं, किसी पर रहम नहीं, किसी नियम के विरुद्ध कोई कार्य नहीं हो सकता और किसी के पक्ष में नहीं हो सकता। नेचर के नियमों के अधिकार में चाहे कोई पदधारी आ जावे, कोई विद्वान आ जावे, कोई सूरमा आ जावे, यदि विनाश के नियम पूरे करता है, तो उसकी सब योग्यता उसको नाश से नहीं बचा सकती। वह निर्धन हो बलवान हो, विद्याहीन हो, विद्वान हो, वह नौकर हो, छोटा हो या बड़ा हो, परन्तु नियम सब पर एक समान हैं।

कोई विद्वान जैसे नशा पीकर नशे की हानि से नहीं बच सकता, कोई धनी होकर, स्वाद वासना के अधीन गल्त खाकर उसका तन उसकी हानियों से नहीं बच सकता। पद, सत्ता, प्रभुत्व के नशे से दूसरों पर अन्याय करके कोई मनुष्य अपने पदों के आधार पर उसके परिणामों से नहीं बच सकता। कोई मनुष्य असत्य और मिथ्याचारी होकर उसकी हानियों से नहीं बच सकता। सत्य का विरोधी होकर, सत्य को जानकर भी उसका साथी न बनकर प्रत्येक मनुष्य मिथ्याचारी बनता है। असत्य और मिथ्या मनुष्य के आत्मा के घातक रोग हैं – जिनके परिणामों से नेचर के नियमों से बच सकना सम्भव नहीं।

जीवन की रक्षा सबसे आवश्यक है। जीवधारी होकर यदि जीवन ही न बच सके, धन बच जावे, मान बच जावें, जायदाद बच जावे, कुछ सांसारिक सुख प्राप्त हो जावे, सन्तान और स्त्री का सुख प्राप्त हो जावे, पद और ओहदे मिल जावें, दूसरों के सामने अपनी सुन्दर छवि स्थापित करने में भी आप सफल हो जावें, परन्तु यह सब कुछ किसी काम का नहीं यदि अपने भावों का, अपनी परिचालक शक्तियों का अर्थात् अपने आत्मा का बोध प्राप्त न होवे।?

इसलिए मनुष्य के जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य अपने आप का ज्ञान प्राप्त करना है, इसके बिना दुनियां की कोई वस्तु उसको नष्ट होने से नहीं बचा सकती, इसलिए आवश्यकता है कि उन हालातों को मनुष्य पहचान सके, अनुभव कर सके, जो इस लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हों, अन्यथा उसका अमूल्य जीवन नष्ट होने के लिए है।

(बलदेव सिंह)

धर्म का वैज्ञानिक आधार आवश्यक है।

वर्तमान युग में धर्म के नाम पर जितने पाखण्ड, जितनी ग़ल्त धारणाएं जोड़ी गई हैं, वह पहले नहीं थी। धर्म को अपने स्वार्थ के लिए प्रयोग किया जा रहा है। राजनीति में धर्म की आड़ लेकर भोले – भाले लोगों की भावनाओं को भड़काया जाता है। दंगे करवाए जाते हैं आगजनी की घटनाएं होती हैं। अपने ही देश की सम्पदा को नष्ट कर दिया जाता है। धर्म को कायम रखने के लिए अन्ध विश्वासों का ऐसा जाल बुना जा चुका है कि उस चक्रव्यूह से निकलना असम्भव के करीब है।

अमरीका जैसे विकासशील देश में भी हमारे भारतीय चैनलों पर ज्योतिष आदि के नाम पर इस प्रकार की Advertisments आती हैं कि लोगों को आकर्षित करके उनसे खूब धन बिटोरा जा रहा है।

सुख और दुख तो जीवन के दो पहलु हैं, परन्तु दुख के समय जो भी उसे दूर करने का लालच दे देता है, मनुष्य उसकी ओर खिंचा चला जाता है। ज्योतिषी बार – बार यह कहते हैं कि सात दिन के अन्दर आपकी सब समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

दुर्भाग्य से धर्म के ठेकेदार धर्म को प्रेम, सद्भाव और शान्ति बढ़ाने के स्थान पर भ्रम

फैलाने में, तोड़ - फोड़ करने, नफरत फैलाने के लिए प्रयोग में ला रहे हैं। धर्म ने मनुष्यों के हृदयों को इतना संकीर्ण बना दिया है कि वह अपने धर्म के विरूद्ध सच्ची से सच्ची बात को सुनने के लिए तैयार नहीं। धर्म मनुष्य को भीरू भी बना देता है।

इस समय ऐसे ज्वंलत मुद्दे उठने चाहिए कि धर्मों के दिन पर दिन उन्नति करने के बावजूद इतना पाप, अपराध क्यों बढ़ रहा है? क्यों मासूम बच्चियों के साथ बलात्कार होता है? क्यों धर्म के स्थानों पर अथाह धन के अम्बार हैं और गरीब भूख से मर रहे हैं। क्यों बड़े - 2 धनवान मन्दिरों को धन देते हैं और गरीबों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान नहीं देते? इसलिए कि उन्हें धर्म की सही परिभाषा ही पता नहीं। आज सारे मन्दिरों, गुरूद्वारों का धन इकट्ठा करके यदि ज़रूरत मन्दों पर लगा दिया जाए, बिजली, पानी की समस्या हल करने पर लगा दिया जाए तो हमारे देश की गरीबी दूर हो सकती है और लोग खुशहाल हो सकते हैं। धार्मिक पुस्तकों की ऊलजलूल बातों पर धर्म को अधारित माना जाता है। प्राचीन काल में जब धार्मिक किताबें ही नहीं थी, तो क्या सब लोग अधर्मी थे? हज़ारों साल पहले जब कोई मन्दिर, मस्ज़िद, गुरूद्वारा नहीं था, तो उस समय लोग आज से अधिक सुखी और सन्तुष्ट थे। यदि ईश्वर मन्दिरों में है, वो अपने दर्शन करने वाले भक्तों के साथ वह दुर्घटनाएं क्यों होने देता है? आगजनी से खुदा अपने भक्तों की रक्षा क्यों नहीं कर सका? यह प्रश्न अन्धविश्वास उठने ही नहीं देते।

हमारी 12 - 13 वर्ष की बच्ची अमरीका के एक बहुत अच्छे स्कूल में पढ़ रही थी। बाईबल के Period में अध्यापिका यह समझा रही थी कि जो ईसा मसीह पर विश्वास नहीं रखते, वह सब नर्क में जाएंगे। जब बच्चों से इसके विषय में पूछा गया, तो हमारी बच्ची ने यह प्रश्न कर दिया कि मैडम जिन लोगों को ईसा मसीह के विषय में कोई जानकारी ही नहीं, तो वह कैसे विश्वास कर सकते हैं, उनका क्या कसूर है कि वह नर्क में जाएं, यह कसूर तो उनका माना जाएगा, जिन्होंने उन्हें ईसा मसीह के विषय में बताया ही नहीं। दूसरा, यदि कोई मनुष्य सारी उमर दूसरों की सेवा करता है और अच्छे काम करता है, जैसा कि ईसा मसीह की शिक्षा भी है तो वह केवल इसलिए नर्क में जाएगा कि वह ईसा पर विश्वास नहीं करता और एक आदमी अपराधी है, पर ईसा पर विश्वास करता है, तो वह स्वर्ग में जाएगा। इसका कोई उत्तर अध्यापिका के पास नहीं था। अब हम सोच सकते है कि धर्म ने मनुष्य के दिमाग़ को किस प्रकार ताले लगा दिए हैं।

अब सब धर्म वाले विज्ञान को नकार नहीं सकते, विज्ञान के आधार पर किसी विषय की परिभाषा एक होती है। हम हिन्दु, ईसाई, सिक्ख होने से पहले इन्सान हैं, हमारे भीतर विकासशील बुद्धि शक्ति हैं। उसका प्रयोग धर्म में क्यों नहीं करते? अब समय आ गया है

मन्दिर, मस्ज़िद, गिरजाघरों से दूर खुले आसमान के नीचे धर्म और विज्ञान की एक साथ चर्चा हो। स्वार्थ, संकीर्णता और रूड़िवादी विचारों को त्याग कर मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं के आधार पर धर्म और संविधान बनाया जाए जिसे अपनाकर इन्सान पापों, मिथ्याओं से छुटकारा पा सके।

परम पू० भगवान देवात्मा ने धर्म और विज्ञान का एक साथ अध्ययन किया और देव धर्म को विज्ञान पर अधारित कर दिया, मिथ्या, झूठ और पाप को मिटाने का बीड़ा उठाया और मनुष्यों के जीवनों के स्तर को सुधार कर उन्हें सत्य रूप से धर्मवान बनाया है। उनका धर्म विश्वास पर आधारित नहीं बल्कि उच्च जीवन पर आधारित है। उच्च भावों को पैदा करना धर्म है, नीच भावों को नष्ट करना धर्म है। क्या हमारे धर्म यह कर पा रहे हैं? नहीं। बल्कि केवल विश्वास करने, नाम जपने से ही मोक्ष मिल सकता है, यह विश्वास मानवता को पाप करने का लाईसैंस दे रहा है। इसलिए पाप बढ़ रहे हैं। इसका एक मात्र हल विज्ञान मूलक धर्म है।

सुरजीत बराड़

अमानत के पैसे मैं रख नहीं सकता।

कोकरी कलां के एक साधु का ज़िकर है, कि वह परलोक सिधार गया। जिस धर्मशाला में वह रहता था वह बहुत पुरानी हो चुकी थी, इसलिये पंचायत ने उसे नए सिरे से बनाने का फ़ैसला किया, और प्रत्येक परिवार को कहा गया, कि वह अपने घर की संख्या के अनुसार पैसे धर्मशाला के लिए अदा करे। पंचायत में बहुत सारे जन बैठे हुए थे। जब एक देव समाजी ने अपना हिस्सा पेश किया और अपने हिस्से के पैसे देने के अतिरिक्त इस सेवक ने पंचायत के सामने 80 रुपए और रखे तो पंचायत वाले हैरान होकर पूछने लगे तो उसने बताया कि यह रुपए तो उस साधु ने मेरे पास अमानत में रखे थे, जिस का पता किसी और को नहीं था। उसका पता मुझे या साधु को था, परन्तु यह अमानत के पैसे मैं अपने पास नहीं रख सकता और इसीलिए मैं पंचायत से निवेदन करता हूं, कि वह पैसे ले ले। उपरोक्त जन इस सुन्दर दृश्य को देखकर हैरान रह गये। वह भली भांति जानते थे, कि साधु ने औरों के पास भी अमानत रखी थी परन्तु बहुत सारे जन वह अमानत खा गये। इस जन का यह दृष्टांत कि उसने अमानत के पैसे ऐसी सूरत में वापिस किये, जब कि किसी और जन को अमानत का पता नहीं था और जिस के लिए कोई लिखत पढ़त नहीं थी, बहुत ही प्रशंसनीय बात है। भगवान् देवात्मा की आत्मिक फुलवाड़ी में ऐसे फूल पैदा होते ही रहे हैं और पैदा होते रहेंगे। फिर भी इस दृष्टांत ने देव समाज के गौरव को बहुत बढ़ाया है। यह जन विशेष सन्मान और श्रद्धा के योग्य श्री देवत्व सिंह जी के छोटे भाई श्री० धर्म सिंह जी थे।

मनुष्य के लिए एक मात्र सच्चा धर्म कौन सा है?

(1)

सच्चा धर्म वहीं हो सकता है, जो कल्पनाओं और विश्वासों पर नहीं, बल्कि विज्ञान पर आधारित हो। वास्तव में अभी तक तो धर्म और विज्ञान के बीच युद्ध ही रहा है। जहां जहां विज्ञान ने धर्म के विरुद्ध परन्तु सत्य पर आधारित कोई बात कही है, तब तब धर्म के रक्षकों ने विज्ञान और विज्ञानिकों पर अत्याचार ही किया है। परन्तु जैसा कि होना चाहिए था, धर्म और विज्ञान के युद्ध में सदा विज्ञान ही अजय रहा है। परम्परागत सभी धर्मों में और विज्ञान में यह मूल अंतर रहा है, कि धर्म विश्वासों पर आधारित है, जबकि विज्ञान सत्यों और तथ्यों पर।

जबकि धर्म और विज्ञान की धारणाएं एक दूसरे के विपरीत है, परन्तु देवधर्म अद्वितीय होने के कारण अपने आपको विज्ञानमूलक छवि होने का दावा करता है।

सच्चे वा विज्ञानमूलक धर्म का पहला लक्षण यह है कि वो ईश्वर के अस्तित्त्व को अस्वीकृत करता हो। अर्थात् कोई धर्म तभी विज्ञानमूलक हो सकता है, जब उसके विचार और शिक्षा की नींव किसी आप्राकृतिक ईश्वरीय सत्ता पर नहीं, बल्कि नेचर मूलक सत्यों पर आधारित हो ।

महान वैज्ञानिक और विकासवादी प्रोफेसर जूलियन हक्सले ने बड़ी ही सुन्दर और महत्त्वपूर्ण शब्दों में विज्ञानमूलक धर्म के विषय में अपनी आशा को प्रगट किया है: -

"I am sure that the world will see birth of a new religion..... just how it will develop and flower, no body knows it but.....its beliefs are not based on revelation on the revelation in the supernatural souse but on the revelation of science and learning about man"

अर्थात् : "मेरा पूर्ण विश्वास है कि संसार में एक नए धर्म का उदय होगा। वो कैसे विकसित होगा और उसका पुष्पित रूप क्या होगा, यह कोई नहीं जानता, परन्तु.... उसके विश्वास किसी आप्राकृतिक (Supernatural) ईश्वरीय वाणी पर आधारित नहीं होंगे, बल्कि ज्ञान और विज्ञान द्वारा मनुष्य के संबंध में उद्घटित सत्यों पर आधारित होंगे।"

देव धर्म की शिक्षा में ईश्वर का कोई स्थान नहीं है, बल्कि उसमें विज्ञान का ही पूर्ण समादर है। देव धर्म प्रवर्तक देवात्मा ने अपनी खोज में ईश्वर के विश्वास को मिथ्या जानकर त्याग कर दिया था और अपने सत्य धर्म की बुनियाद विज्ञान की ठोस ज़मीन पर रख दी। देवात्मा ने फरमाया है : "ईश्वर विषयक मिथ्या विश्वास के चले जाने पर और वैज्ञानिक विधि के पूर्ण अधिकार में आ जाने से जो ज्ञान इस विधि के अनुसार सत्य प्रमाणित हो, वही ग्रहणीय रह गया। प्राचीन व नवीन, प्रचलित व अप्रचलित, आप्त व अनाप्त, स्वदेशी व विदेशी आदि के विचार से कोई बात विश्वसनीय न रही। जो कुछ वैज्ञानिक पूर्ण विधि के द्वारा

अनुमोदित और समर्थित हो, वही सत्य ग्रहणीय और उसी का ढूंढना और उसी को प्राप्त करना, मेरा सार लक्ष्य बन गया।"

सत्य धर्म वा विज्ञानमूलक धर्म का दूसरा लक्षण यह है कि उसमें संदेह, प्रश्न वा तर्क का स्थान हो। परम्परागत धर्मों में संदेह, प्रश्न वा तर्क को निषिद्ध मानकर, केवल आस्था, श्रद्धा वा स्वीकृति की ही बात की जाती है। धर्म विश्वासों पर आधारित है और उनके अधिकतर विश्वास मिथ्या वा कल्पना है। अगर उन पर कोई तर्क या प्रश्न करेगा, तो धर्म की हकीकत खुल जाएगी। जब - जब संदेह, तर्क, प्रश्न वा विज्ञान ने धर्म में प्रवेश करना चाहा, तब तब पुरोहितों, मौलवियों और पादरियों आदि मजहब के पक्षपातियों में खलबली मच गई और उन्होंने कहना शुरू किया कि यह कब हो सकता है कि पहले बुजुर्ग जो कह चुके हैं, वो ठीक न हो? इसलिए धर्म में प्रश्न, संदेह या तर्क का कोई स्थान नहीं है, बल्कि वही देव धर्म विज्ञान की तरह अपने विश्वासों, मतों और शिक्षा पर तर्क, प्रश्न वा संदेह की आज्ञा देता है और विज्ञान के नए रूप और रंग में अपने आप को परिवर्तित कर लेने की जोरदार आज्ञा देता है।

देव धर्म प्रवर्तक ने अपने ग्रंथ 'देवशास्त्र दूसरा खंड' में अपने अनुयायियों को यह आदेश दिया है कि यदि उनकी कोई शिक्षा विज्ञान की कसौटियों के अनुसार ठीक प्रमाणित न हो, तो वह भी सत्य मानने के योग्य नहीं।

उन्होंने इसी ग्रंथ में फरमाया है: "इस पृथ्वी के मनुष्य जगत में इस विषय में जो बहुत बड़ी कठिनाई रही है और है, वह यह है कि विविध सम्प्रदायों के करोड़ों लोग जैसे पहले इन कसौटियों (विज्ञान की कसौटियों) का कोई ज्ञान न रखते थे, वैसे हि वह अब भी नहीं रखते, और न वह बतलाने पर हि अपने - 2 विश्वासों वा धर्म मतों की परीक्षा करने वा करवाने के लिए तैयार पाए जाते हैं। वह इन विषयों में मिथ्या के इतने अनुरागी बन चुके है, कि वह सत्य को चाहते ही नहीं।"

देव धर्म परम्परागत पुराने वा नए धर्म मतों की न्याई विज्ञान के साथ कोई युद्ध की स्थिति में नहीं हैं, बल्कि देव धर्म विज्ञानमूलक धर्म हैं। इसमें ईश्वर का कोई स्थान नहीं है। इसकी बुनियाद नेचर के ऊपर खड़ी है। यह विज्ञान की न्याई अपनी शिक्षा पर प्रश्न करने की आज्ञा देता है। इसलिए देव धर्म विज्ञानमूलक होने के कारण सारी दुनिया के लिए एक मात्र सच्चा धर्म है।

(2)

सच्चा धर्म वा विज्ञानमूलक धर्म सारी दुनिया के लिए एक ही हो सकता है। भिन्न - 2 लोगों के लिए भिन्न - 2 नहीं। जैसे विज्ञान की सच्चाईयां सारी दुनिया के लिए एक है, वैसे ही धर्म विषयक सच्चाईयां भी सारी दुनिया के लिए एक ही हो सकती है।

देवात्मा ने फरमाया है :- "धर्म जीवन की शिक्षा जब विश्वव्यापी अटल नियमों के अनुसार हो, तभी वह विज्ञानमूलक कही जा सकती है।"

"विज्ञानमूलक धर्म शिक्षा नाना मनुष्यों के लिए नाना प्रकार की नहीं हो सकती, किन्तु जैसे गणित वा शरीर तत्व की शिक्षा सब मनुष्यों के लिए एक है, वैसे ही विज्ञानमूलक धर्म शिक्षा भी मनुष्य मात्र के लिए एक ही हो सकती है।"

कल्पनाएं भिन्न - 2 होती है और एक दूसरे के विपरीत भी हो सकती है, जबकि सत्य एक होता है और एक सत्य दूसरे सत्य के विपरीत नहीं होता। परिचलित धर्मों में भिन्न - 2 कल्पनाओं का राज्य है और वह एक दूसरे के विरुद्ध है। जैसे : ईसाई लोग मानते है कि ईश्वर ने एक बार और केवल एक बार ईसा मसीह के रूप में जन्म लिया है और ईसा की माँ ईश्वर की माँ है। जबकि मुसलमान मानते हैं कि ईश्वर का कोई माँ बाप नहीं है और उसने कभी कोई अवतार नहीं लिया।

मुसलमान कहते है कि खुदा ने हमें गाने और बजाने के द्वारा पूजा करना मना किया हुआ है, परन्तु ब्रह्मो और आर्य और ईसाई कहते हैं कि उसने हमें गा बजाकर पूजा करने से मना नहीं किया है।

ईसाई कहते हैं कि उसके ईश्वर ने उन्हें एक पत्नी के जीते जी दूसरा विवाह करना मना किया हुआ है, परन्तु मुसलमान कहते है कि उनके ईश्वर ने एक पत्नी के जीते जी चार निकाह तक करना उचित बताया हुआ है।

हिन्दुओं का ईश्वर कभी कछुआ, कभी सुअर, कभी मनुष्य के रूप में जन्म लेता है और हिन्दु मानते है कि अब कलयुग में वह फिर जन्म लेगा। जबकि इस ईश्वर को ईसाई, मुसलमान, ब्रह्मो और आर्य लोग कल्पित ईश्वर घोषित करते हैं।

ऐसे सैकड़ो दृष्टान्त दिए जा सकते है, जो भिन्न - 2 धर्म भिन्न भिन्न प्रकार की और परस्पर विरोधी शिक्षा देते है।

(3)

धर्म के नाम से प्रचलित विविध मिथ्या साधन :- धर्म के नाम से विविध साधन प्रचलित है। जैसे ईश्वर का नाम जपते रहना, अपना घर, संबंधी, कारोबार न रखना, गेरवे वस्त्र पहनना, सिर वा मुँह के बाल न रखना, वा सारे बाल रखना, धर्म के नाम पर चिन्ह पहनना, माला पहनना, व्रत रखना, होम करना, मंदिर या पहाड़ की खोह में रहना, जंगलों में रहना, तीर्थ स्थानों पर जाना, किसी तलाब या सरोवर में स्नान करना, त्रिशूल रखना, गले में किताब लटकाना, मुँह वा गले में मूर्ति रखना, मैली और खुली जटा रखना, दर - 2 भीख मांगना, हमेशा फिरते रहना, कोई पाठ करना वा भजन गाना आदि - 2 धर्म के नाम से जप, तप, पूजा, पाठ, बली आदि की शिक्षा प्रचलित है, जबकि इन सारे साधनों का दूर दूर तक धर्म के साथ कोई संबंध नहीं है। बल्कि कई साधन तो जो कि धर्म के नाम से प्रचलित हैं, महा हानिकारक हैं। यह सारे साधन इन्सान के पापों को खत्म नहीं कर सकते, बल्कि कई सूरतों में आग में घी का काम करते है।

(4)

धर्म की विश्वव्यापी और विज्ञानमूलक परिभाषा :- दुनिया के इतिहास

में पहली बार देवधर्म ने सत्य धर्म की विश्वव्यापी और विज्ञानमूलक परिभाषा देने का गौरव हासिल किया है।

देवात्मा ने अपने ग्रंथ 'पूजनीय देवशास्त्र पहला खंड' में सत्यधर्म की परिभाषा इस प्रकार दी है: –

"मनुष्य के आत्मा की गठन, उसके नीच अनुराग और नीच घृणाओं से उत्पन्न उसके विविध रोगों और उन रोगों के कारण उसमें जिस – 2 प्रकार का पतन होता है, उस पतन और उस पतन के बढ़ते जाने से अन्त में उसके जीवन वा उसके अस्तित्व का जो पूर्ण विनाश हो जाता है, उस विनाश और उसके ऐसे पतन से उनकी मोक्ष की विधि और उसमें उच्च जीवन वा आत्मिक बल उत्पादक उच्च भावों वा अनुराग की उत्पत्ति और उन्नत्ति वा विकास के संबंध में नेचर के सत्य नियमों और उसकी सत्य घटनाओं पर स्थापित जो सत्य ज्ञान है वही और केवल वही ज्ञान सत्य धर्म का ज्ञान है।"

मनुष्य के शरीर में उसकी जान, जीवनी शक्ति वास करती है। यह जान वा जीवनी शक्ति उसके प्रत्येक सैल में है। इसी जान वा जीवनी शक्ति का नाम आत्मा है। इस आत्मा की उसी प्रकार गठन है जिस प्रकार शरीर की गठन है। यह जीवनी शक्ति वा आत्मा मनुष्य के शरीर का निर्माण करती है। पौधों की जीवनी शक्ति पौधों के शरीर का निर्माण करती है। पौधों के बीज में जो जान है, अगर उसे जलाकर, वा उबाल कर खत्म कर दिया जाए, तो वा बीज पौधा नहीं बना सकेंगे। इससे स्पष्ट है कि जान ही शरीर का निर्माण करती है और उसके मर जाने पर शरीर का निर्माण नहीं होता। आत्मा ही शरीर की पालना करती है, उस पर शासन करती है और उसकी रक्षा करती है। इस आत्मा में मानसिक शक्तियां, सुख दु:ख विषयक बोध शक्तियां, सुख के प्रति आकर्षण और दुख के प्रति घृणा की शक्तियां मौजूद हैं।

मनुष्य अपने आत्मा के इस अंग अर्थात् सुख के प्रति आकर्षण और दु:ख के प्रति घृणा से सबसे अधिक परिचालित होता है। इसी को मनुष्य के भाव कहते हैं। यह भाव मुख्य तौर पर नीच भाव वा नीच अनुराग होते हैं। इसी से ही नीच घृणा की उत्पत्ति होती है। मनुष्य इन्ही नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं को रखकर और उनका दास बनकर नेचर के उस शुभ नियम को तोड़ता है कि जिसे विकास कहते हैं और विनाश का साथी बनता है। इससे ही मनुष्य के आत्मा का पतन होता है। आत्मा कठोर और अन्ध बन जाता है। आत्मा उल्टा दृष्टा बन जाता है। अनुचित दु:खों में फंस जाता है और आत्मा का बल खोते – 2 धीरे – 2 आत्मिक मृत्यु का शिकार हो जाता है। इस आत्मिक पतन से मोक्ष उच्च दु:ख और उच्च घृणा से होती है। इस मोक्ष की विधि और मोक्ष प्राप्ति और नाना उच्च भावों में विकास का नाम ही धर्म है।

दृष्टांत के तौर पर एक जन जो पशुओं को मार कर खाता है, उसे उसमें सुख मिलता

है। यह उसका नीच सुख अनुराग है। इससे आत्मा का पतन होता है। आत्मा कठोर और अंधा हो जाता है। उसे आत्मिक अंधता में पशुओं का दु:ख दिखाई नहीं देता। किसी की जान लेने का बुरा काम उसे अच्छा लगता है। वह बुरे काम को अच्छा देखकर उल्टा दृष्टा बन जाता है और अपनी निर्माणकारी शक्ति को धीरे - 2 खोता जाता है। अगर वो किसी ऐसे जन की संगत करे जो मांसाहार की बुराई के प्रति उच्च घृणा रखता हो और उसमें कोई जन्मजात योग्यता भी मौजूद हो, तो वह उस उच्च घृणा को पाकर इस आत्मिक पतन के कार्य से बच सकता है। और, और अधिक शक्ति पाने पर अपने पहले किए पाप के लिए उच्च दु:ख भी बोध कर सकता है।

देवात्मा धर्म के पूर्ण अवतार पैदा हुए है। उनके अन्दर प्रत्येक झूठ और बुराई के लिए जोरदार घृणा मौजूद है। वो सच्चाई और भलाई के पूर्ण प्रेमक है। उनके प्रभावों को पाकर सैकड़ों हजारों जनों ने झूठ और बुराई से अपनी - 2 योग्यता के अनुसार उच्च घृणा पैदा की है और उनसे मोक्ष लाभ की है। इसके इलावा देवात्मा के देव प्रभावों को ओर अधिक मात्रा में पाकर अपने पहले किए हुए पापों के लिए उच्च दु:ख बोध करके सैकड़ों परिशोध भी किए है। देवात्मा के देव प्रभावों से सैकड़ों मनुष्य में उच्च भाव और उच्च अनुराग पैदा हुए है।

देवात्मा ने 'मुझ में देव जीवन के विकास' में इस प्रकार लिखा है :- "मैने सच्चे अर्थ में सिद्धार्थ होकर अपने आप को जितना धन्य - 2 और कृतार्थ बोध किया, उसका वर्णन नहीं हो सकता। धर्म की विज्ञानमूलक भिक्ति के विषय में चार महा तत्त्वों के प्रकाश ने मुझ पर जिस प्रकार से धर्म के सत्य पथ को खोल दिया और उसकी आवश्यकता को मुख्य और अटल रूप से प्रगट किया, उसकी महिमा गाई नहीं जा सकती। धर्म वा मजहब वा दीन वा रिलीजन की अब तक जितनी भिन्न - 2 और कल्पित परिभाषाएं प्रचलित थी, उनके स्थान में प्रकृत धर्म के प्रकाशर्थ मनुष्य मात्र के लिए उसकी एक सत्य और विज्ञानमूलक परिभाषा स्थिर हो गई। अब धर्म नाना मनुष्यों के मुखों से नाना प्रकार की गप्पों की चीज न रहा, किन्तु मनुष्य मात्र के लिए एक परिभाषा की चीज़ बन गया।"

(चलता) - गौतम जी

देव समाज का अनमोल सम्बन्ध

मेरी बहुत उपकारी, हितकारी, परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभावों का स्त्रोत, मरती हुई रूहों की वचावन हार, पापों में मुक्त आत्माओं के सुधार का चश्मा, मिथ्या विश्वासों से उद्धारकर्ता मेरी प्यारी देव समाज!

आपको शत: प्रणाम! गुरू महाराज के प्रभावों से सींचे हुए आपके वातावरण से हमें क्या कुछ मिला है, उसका चन्द शब्दों में ब्यान करना मेरे जैसे तुच्छ जीव के लिए बेहद कठिन

है। परम पूजनीय भगवान ने आपकी स्थापना करके मानवता को सदा के लिए ऋणी बना दिया है। आपकी शाखा धर्म विकासालय का अनुभव, वातावरण देखने का सौभाग्य मिला है। उसके वह सेवा, साधन के सुन्दर नज़ारें, विकासार्थियों और कर्मचारियों से भरे हुए सौभाग्यशाली कमरे वह श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी देवता स्वरूप हस्तियों के दर्शन करने का सौभाग्य मिला है। कर्मचारियों द्वारा आपकी शिक्षा का प्रचार सुनने और कई बार भागीदार बनने का भी सौभाग्य मिला है। आपका सभासद होना ही बड़ा सौभाग्य था, परन्तु विकासालय से शिक्षा पाना जीवन को और स्तर पर जीने का इच्छुक बनाता रहा है।

ऐ हमारी प्यारी देव समाज! आपने मानवता को मोटे पापों से ही नहीं बचाया, उन्हें मिथ्या के घनघोर अन्धेरे से निकालकर विज्ञान मूलक शिक्षा का पाठ पढ़ाया है। आपने सम्बन्धों में न केवल मिठास, कृतज्ञता पैदा करके उन्हें सरस बनाया है बल्कि सम्बन्धों में मनुष्यों द्वारा किए गए जुल्मों, अत्याचारों, दुर्व्यवहारों के लिए परिशोध कराए हैं। वीरान और उजड़े हुए घरों को बसाया है। कैसे कैसे सच्चे तपस्वी पैदा किए हैं, जिन्होंने अपनी कुर्बानियों के द्वारा आपको सींचा है। गुरू के देव प्रभाव पाकर आपको उन्नत किया है। आपकी संगत ने अहंकारियों के अहं को चूर चूर किया है। बेईमानों को सच्चे ईमानदार बनाया है। आपके ऋण को उतारना कठिन ही नहीं असम्भव है। शोक! कि आपके पवित्र वातावरण को हम मानव सम्भाल नहीं सके। आपके भी टुकड़े हो गए, कोई यहाँ गिरा, कोई वहाँ गिरा। आपके नाम पर संस्थाएं खोली गई थी ताकि नौजवानों में आपकी शिक्षा फैले, वह नेक इन्सान बनें, बनें भी। देव समाज की संस्थाओं में पढ़ी हुई लड़कियां अच्छी बेटियां, अच्छी पत्नियां, और अच्छी माताएं बनी। उनके जीवनों पर आपके उच्च वातावरण की छाप थी, परन्तु धीरे यह लक्ष्य बदल गया, संस्थाएं पैसा कमाने का स्त्रोत बन गई। आपके उच्च वातावरण का प्रभाव समाप्त हो गया। आपके टुकड़े होने से हमारे दिलों के भी टुकड़े हो गए।

हम आपकी छत्रछाया में पले बढ़े, कई पहलुओं में आपकी पक्की मोहर हमारे दिलों पर लगी है, परन्तु जो आपकी सुरक्षा, आपकी उन्नति में बढ़ चढ़ कर काम करना चाहिए, उसमें बहुत कमी है, परन्तु आपकी उन्नति अवश्यम्भावी है, क्योंकि आपकी स्थापना ऐसे अद्भभुत आर्विभाव के द्वारा विकास क्रम में हुई है, जिन्होंने आपको अपने खून से सींचा है और आपको विकास क्रम के हवाले किया है। विकासक्रम रुकने वाला नहीं, आपका विकास अवश्य होगा, अधिकारी आत्मा आएंगे और घर - घर, नगर - नगर आपका झंडा फहराएंगे। यह संसार आपकी शिक्षा पाने के लिए मजबूर होगा। यही कामना है कि हम अपने नीच जीवनों से आपको हानि न पहुँचाएं। आपके सच्चे सेवक रहकर इस दुनियां से जाएं। आप द्वारा पाए उपकारों को कभी न भूलें। अपने किसी उदाहरण से आपको धब्बा न लगाएं।

ऐसी कामना के साथ आपकी तुच्छ सेविका

- सुरजीत बराड़

देव समाज का मैम्बर होने व रहने के लाभ और उससे कट जाने की हानियाँ

वैज्ञानिकों ने इस सत्य को भली भाँति जाना और प्रगट किया है कि एक-एक अस्तित्त्व के बनने और बिगड़ने में उसके चौतरफ़ा सामानों और हालात का बहुत बड़ा हाथ है।

कोयले का एक-एक टुकड़ा इसलिए बहुमूल्य रत्न बन गया है कि उसे ऐसे अनुकूल सामान प्राप्त हुए, कि जिनसे इसमें सूर्य की किरणों और अन्य सामानों ने वह परिवर्तन उत्पन्न कर दिया कि जो परिवर्तन साधारण कोयले को इस प्रकार के सामान न मिलने से प्राप्त न हुआ। उद्भिद् जगत के एक-एक प्रकार के पौधे एक-एक प्रकार के सामान और ऋतु में जैसी अच्छी अवस्था प्राप्त करते हैं और दूसरी प्रकार के हालात और मौसम में जैसी दुर्गति को प्राप्त होते हैं, वह जानने वालों से छिपी हुई बात नहीं है। पशु जगत में भी यही नियम काम करता है। कितने ही पशु अनुकूल सामानों को पाकर उच्च कोटि के पशु बन गए हैं और कितने ही प्रतिकूल सामानों में रहकर नीच अवस्था को प्राप्त हो गए हैं या बिल्कुल समाप्त हो गए हैं।

मनुष्य जगत में भी हम इसी अटल नियम को काम करता हुआ देखते हैं। एक ही माता-पिता से पैदा होकर और प्राय: एक ही प्रकार की मानसिक पूंजी या शरीर रखने वाले दो सगे भाइयों में से यदि एक भाई को किसी स्कूल या कालिज में दाखिल कर दिया जाए तो वह अपनी मानसिक शक्तियों को उन्नत करके जहां एक ओर बहुत विद्वान बन जाता है, वहाँ उसी का दूसरा भाई जो गाँव मे ही रहता है और किसी स्कूल या कालिज में प्रविष्ट होकर शिक्षा लाभ नहीं करता, मूर्ख का मूर्ख रह जाता है।

इसी प्रकार मनुष्यात्मा के जीवन के बनाने और बिगाड़ने में चारों ओर के सामानों का बहुत बड़ा हाथ है। प्रतिकूल सामानों में रहकर एक-एक आत्मा बहुत नीच गति को प्राप्त हो जाता है और अनुकूल सामानों में रहकर एक-एक आत्मा उच्च गति ग्रहण करके बहुत उच्च हो जाता है। देवसमाज के संस्थापक श्री देव गुरू भगवान् ने जो अति हितकर और दुनिया में निराली देवसमाज की स्थापना की है, वह एक इस प्रकार की समाज या सोसाइटी है कि जिसके साथ जुड़ने और जुड़े रहने से एक-एक आत्मा को नीच अवस्था से निकलने और उच्च अवस्था को लाभ करने का अवसर मिलता है और इसका नाना प्रकार से भला होता है। एक-एक अधिकारी आत्मा को इस समाज में आकर जो लाभ पहुँचते या पहुँच सकते है, उनका पूरा-पूरा वर्णन करना तो अत्यन्त कठिन है, परन्तु कुछ लाभों का नीचे वर्णन किया जाता है :-

(1) इस समाज में प्रविष्ट होने के लिए सबसे पहिले आठ मोटे-मोटे महा पापों से बचने की आवश्यकता होती है कि जो महा पाप आत्मा के लिए अत्यन्त हानिकारक होने के अतिरिक्त मानव जगत में अत्यन्त

भयानक नरक पैदा करने वाले हैं। इन महा पापों से दुनिया की कोई समाज या सोसाइटी खाली नहीं है।

(2) न केवल देवसमाज में प्रविष्ट होने के लिए बल्कि इसमें लगातार रहने के लिए भी इन आठ पापों से सदा बचे रहने की आवश्यकता होती है और ऐसे सामानों में मनुष्य रहता और रह सकता है कि जिनसे इसकी इन अत्यन्त हानिकारक पापों से सदा के लिए रक्षा हो।

(3) इन मोटे-मोटे पापों के अतिरिक्त देवसमाज के एक-एक मैम्बर को धीरे-धीरे और भी कई प्रकार के पापों से मोक्ष पाने का अवसर मिलता है।

(4) स्वयं श्री देव गुरू भगवान् के साथ जीवन्त सम्बन्ध स्थापन करने से या उनके जिन सेवकों में उनकी ज्योति या शक्ति कुछ भी काम कर रही है, उनकी संगत से श्री देव गुरु भगवान् की अद्वितीय ज्योति और शक्ति के जीवन दायक उच्च प्रभावों को प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

(5) यह वह ज्योति और शक्ति है कि जिसके मिलने से नाना प्रकार के वह बोध आत्मा में उत्पन्न होते हैं कि जो उसे तरह-तरह की नीच गतियों से मोक्ष देते हैं।

(6) यह वह ज्योति और शक्ति है कि जिसके मिलने से नाना प्रकार की उच्च अनुराग शक्तियाँ अधिकारी आत्माओं में उत्पन्न होती हैं, कि जो उन्हें नाना सम्बन्धों में उच्च सम्बन्ध सूत्रों से जोड़ कर विकासकारी जीवन रस पाने के योग्य बनाती हैं।

(7) इस जीवन रस के मिलने से उसकी जीवनी शक्ति दिनों-दिन बढ़ती है और उसके भीतर आत्मिक बल और तेज की उन्नति होती है और उसका जीवन नाना उच्च अंगों में विकास लाभ करता है।

(8) नाना सम्बन्धों में नीच गतियों से मोक्ष पाने पर इन नीच गतियों के अत्यन्त भयानक परिणामों अर्थात् तरह-तरह के दु:खों और हानियों से छुटकारा लाभ करने का अवसर मिलता है।

(9) नाना सम्बन्धों में उच्च सूत्रों के द्वारा बंध ने से आत्मा उच्च जीवन सम्बन्धी उच्च सुखों और परमानन्द को लाभ करने के योग्य बनता है।

(10) इससे देव शास्त्र में लिखे हुए सोलह यज्ञों की महा कल्याणकारी शिक्षा मिलती है और उनके साधन के द्वारा सच्चा हित आता है।

(11) श्री देव गुरू भगवान् की ज्योति पाकर अधिकारी आत्मा धर्म के सत्य ज्ञान में उन्नति लाभ करता है और सब प्रकार की झूठी कल्पनाओं और भाँति-भाँति के ग़लत संस्कारों से जो मनुष्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं, मोक्ष लाभ करता है।

(12) जिन बुरी रसमों पर चलने से व्यर्थ रुपया बरबाद होता है या और कई प्रकार की हानियाँ होती हैं, उनसे बचने का अवसर मिलता है।

(13) अपने जीवन की शक्तियों को अधिक से अधिक सफल करने का अवसर मिलता है।

(14) अपने जीवन की शक्तियों से यदि कोई शुभ फल पैदा किये जायें या किसी आत्मा में उच्च परिवर्तन पैदा किया जाये तो न केवल उसकी रक्षा होने का अवसर मिलता है, बल्कि उसके आगे बढ़ते रहने के लिए भी प्रबन्ध जारी रह सकता है। और इस प्रकार उसका जारी किया हुआ भलाई का क्रम उसके साथ ही समाप्त हो जाने की बजाए उसके पीछे भी जारी रह सकता है।

(15) उसके अपने भले के अतिरिक्त उसकी पत्नी, उसके बच्चों और अन्य पारिवारिक सम्बन्धियों के लिए भी नाना प्रकार के हितों का द्वार खुल जाता है और उसकी सन्तान का समाज के साथ सम्बन्ध स्थापन हो जाने से उसके पोतों और पड़ोतों की भलाई का भी मार्ग खुल सकता है।

(16) कितनी ही मोटी - मोटी बुराइयों से जिनसे शरीर की भी हानि होती है, सुरक्षित होकर शारीरिक लाभ भी प्राप्त होता है और जीवन के प्रत्येक अंग और प्रत्येक कार्य में हितकर सम्बन्धी और सहयोगी प्राप्त होने से सामाजिक जीवन में भी बहुत बड़ा लाभ प्राप्त होता है। आदि - आदि।

यह और इसी प्रकार के ओर बहुत से लाभ देव समाज में रह कर एक - एक जन को प्राप्त होते और हो सकते हैं। परन्तु इस समाज से कट कर एक - एक जन इस प्रकार के लाभों से वंचित हो जाता है और अनेक बार प्रतिकूल सामानों में पड़कर वह जिन मोटे - मोटे पापों को तरक करके देवसमाज में प्रविष्ट हुआ, उनमें फिर नई सूरतों में लिप्त हो जाता है।

अब जिस देव समाज के साथ जुड़कर उपरोक्त सब लाभ प्राप्त होते हों और नाना प्रकार की आत्मिक, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और पारिवारिक हित लाभ होते हों और जिससे कट कर उपरोक्त कुछ हानियाँ होती हों, उस समाज के साथ जुड़े रहने में कौन ऐसा बेसमझ होगा जो अपनी सब से बढ़कर भलाई और इससे कटने में अपनी सबसे बढ़कर हानि बोध न करे और इसके साथ जुड़े रहकर और अधिक से अधिक जुड़े रहकर जहाँ अपना कल्याण साधन करना न चाहे वहाँ अपने सम्बन्धियों का भी हित न करना चाहे।

साथी सेवको! क्या आप इस समाज की महिमा को जैसा चाहिए वैसा उपलब्ध करते हैं? यदि करते हैं तो इसके साथ अधिक से अधिक जुड़ने और इसके काम को उन्नति देने के लिए आप क्या संग्राम करते हैं? देव समाज के पूजनीय संस्थापक श्री देव गुरू भगवान् का हम सब पर ऐसा शुभ आर्शीवाद हो कि हम लोग इस समाज की अधिक से अधिक महिमा पहचान सकें और इसके साथ जुड़े रहने में ही जो हमारी सबसे बढ़कर भलाई और इससे कटने में सबसे बढ़कर हानि है, उसे अनुभव कर सकें। और न केवल आप ऐसी हितकर समाज से जुड़े रहकर अधिक से अधिक हित पाने के अधिकारी बनें, बल्कि अपने जातीय जनों और देशवासियों को भी उसके साथ जोड़ कर उनके सच्चे हित का मार्ग खोल सकें।

जीवन पथ - दर्शक

आत्म – अन्धकार

जैसे बाह्यक ज्योति के बिना अपना शरीर भी दिखाई नहीं देता और न अपने आस पास की ही कोई वस्तु नज़र आती है और न ही यह पता लगता है कि मेरे किसी कपड़े पर कही मैल या स्याही लगी हुई है और किसी मैली वस्तु के साथ लगने से कितनी और अधिक मैल या स्याही मेरे शरीर या कपड़े को लगती जाती है, हां जैसे बाहर की ज्योति के बिना इन बातों का कोई पता नहीं होता और नहीं हो सकता, ठीक उसी प्रकार जब कोई मनुष्य अपने अस्तित्व को, उसके हित और हानि को नहीं देखता और नहीं देखना चाहता और न ही इस विषय में कोई ज्ञान रखता या रखना चाहता है, कि इस विश्व में जन्म पाकर इस विश्व के नाना विभागों के साथ उसका क्या स्म्बन्ध है और किस सम्बन्ध से उसे क्या कुछ भलाई या बुराई लाभ हो रही है या लाभ हो सकती है, तो उसकी ऐसी अवस्था आत्म अन्ध कार या रूहानी अन्धेरे की अवस्था कहलाती है और ऐसी अवस्था रखने वाला जन अन्धा या अविवेकी कहलाता है।

ऐसी अविवेकी जन अपने भीतर की नाना प्रवृत्तियों, वासनाओं और उत्तेजनाओं आदि की शक्तियों के द्वारा परिचालित होकर नाना प्रकार की चिन्ताएँ और क्रियाएं करता है। परन्तु उसकी उन चिन्ताओं या क्रियाओं से उसके अस्तित्त्व की क्या दशा होती जाती है और वह किस अवस्था को पहुँचता जाता है और उस के द्वारा किस किस को क्या क्या दु:ख और हानि पहुँच रही है और उसके अन्दर उसके लिये और औरों के लिये किस कदर खौफ़नाक दु:खों और अज़ाबों का सामान इक्ट्ठा हो रहा है, इसका उसे कोई पता नहीं होता। उसके भीतर की सब प्रवृत्तियां, वासनाएं और उत्तेजनाएं, उसकी बुद्धि और विद्या और उसकी अहम् शक्ति में से ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो उसे उपरोक्त ज्ञान दे सके। वह उपरोक्त सब शक्तियां रखकर भी अपने अस्तित्त्व और उसके प्रकृत हित और अहित के सम्बन्ध में ज्ञान की ओर से पूर्णत: अन्धेरे और बेसुधि की हालत में रहता है। ऐसे लाखों और करोड़ों मनुष्य सोचने और बोलने की बहुत कीमती शक्तियों को पाकर बेशक इन्सान बन गए हैं और क्या अपने बाह्यक ढांचे में कुछ न कुछ अन्तर के आ जाने से और क्या अपने खाने पीने, रहने सहने और अन्य वासनाओं के सुखों के साधानों को पाने के विचार से बेशक वह पशुओं से अलग पहचाने जाते हैं, परन्तु अपने भीतर की आन्तरिक गठन के विचार से न केवल यह कि वह पशुओं की अपेक्षा किसी प्रकार से बेहतर हालत में नहीं है, बल्कि बहुत सी सूरतों में उनसे बहुत खराब, बहुत हानिकारक और दु:खी और बहुत दुखदाई अवस्था में पहुँच चुके हैं और उनकी एक या दूसरी प्रवृत्ति, वासना या उत्तेजना आदि की शक्ति अपनी सेरी (तृप्ति) के लिए उन्हें जिधर ले जाती है, उधर को उनकी गति देखी जाती है और धीरे-धीरे एक-एक प्रवृत्ति या वासना या उत्तेजना की तृप्ति के पीछे जाते-जाते उन्होंने अपनी कई वासनाओं को इतना बढ़ा लिया है कि वह अब उनकी तृप्ति के लिए ऐसे नाच नाचते और ऐसे

शेष पृष्ठ 20 पर

मल्लेका सिरसा में सत्संग

28.01.2022, शाम की सभा :-
सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

श्रीमान जी ने बताया कि धर्म एक है, अलग अलग धर्म नहीं हो सकता। धर्म विश्वव्यापी होता है। शरीर के स्वास्थ्य वा रोगी होने को हम समझते हैं, धर्म आत्मा की सेहत का नाम है। परम पूजनीय भगवान ने फरमाया है कि धर्म सम्बन्धों में हैं। सम्बन्धों में ही दुःख वा सुख है। मनुष्य सुखी रहना चाहता है, इसलिए अच्छे भावों वा क्रियाओं से ही सुख प्राप्त हो सकता है। जहां धर्म अर्थात धर्म भाव हैं, उन्हीं के घरों में स्वर्ग है। नाशुक्रा पन सम्बन्धों को नर्क बना देता है, इसलिए यह कहावत बनी है कि इतना नाशुक्रा जितना बेटा" अगर हमारे सम्बन्ध खुदगर्ज़ी पर आधारित है, तो हम कमीने हैं । धर्मी होने के लिए जिन्होंने हमारी सेवा की है, उनकी सेवा करें। एक लड़की बहुत कमाती है, परन्तु कभी अपने माता पिता को गिफ्ट नहीं दिया, कहती है माँ बाप से तो लेना होता है, देना नहीं, दूसरी तरफ देव समाज के सेवक श्रीमान बलजीत सिंह जी हैं, जो अपने माता पिता के लिए कैनेडा से आ गए और उनकी सेवा में रत रहे, जबकि उनका सारा परिवार वहां पर है, वह कल्याण गाँव में उनकी सेवा में लगे हुए हैं?

हमें धर्म की और कोई समझ न भी आए तो कम से कम मोटे पापों से तो बचें। बाकी जितने उच्च भाव पैदा होते जाएंगे बेटा क्या बेटी सेवाकारी बनेंगे। सम्बन्धों में हानि पहुँचाना, दुःख, पहुँचाना पाप है।

सभापति जी ने माता - पिता के उपकारों की ओर भी ध्यान फेरा, अगर उनको दुःख पहुँचाया है, तो पश्चाताप हो, क्षमा याचना हो और सेवा हो, यहीं से धर्म शुरू होता है।

29.10.2022, सुबह 9.30 बजे :-
सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

माँ के सम्बन्ध में सुन्दर भजन का गान, श्रीमान गुरूचरण सिंह जी ने किया।

फिर सभापति जी ने बताया कि जीवन के लिहाज़ से बहुत अन्धेरा बढ़ रहा है। शिक्षा संस्थान बढ़ रहे हैं, परन्तु वृद्ध आश्रम भी बढ़ रहे हैं। गाए को माता कहते हैं, इसका शोर बहुत है, परन्तु गाईयों की दुर्दशा भी हमारे देश में है। दरअसल जितनी गुरू महाराज की रोशनी मिलती है, सम्बन्धों की कदर जागती है। माँ का दर्जा पिता से भी ऊँचा है। माता पिता हमारे जन्मदाता रक्षाकर्ता, पालनकर्ता और शिक्षा दाता हैं। माता पिता हमारे ऊपर मेहरबानियों का दरिया बहा देते हैं। सभापति जी ने अपने भाई की बिमारी पर अपने पिता की कुर्बानी को बताया। गुरू महाराज ने फरमाया है कि मेरी ज्योति पाओ, तो तुम्हें पता चल जाएगा कि माता - पिता मामूली हस्ती नहीं हैं। हम अपने आप नहीं बनें। परम पूजनीय भगवान ने माता पिता के सम्बन्ध में दिन रखे हैं। जिनमें विशेष रूप से हम अपने माता पिता के उपकारों को याद करें। श्रीमान जी ने कई सेवाकारी बच्चों की घटनाएं बताई।

श्रीमान सुन्दर लाल जी ने अपनी खुशी प्रगट की कि मेरा सारा परिवार सभा में शामिल है।

30.01.2022, सुबह :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

सभापति जी ने बताया कि गुरू महाराज के जीवन की कोई ऐसी घटना नहीं, जिसको ग़ल्त ठहराया जा सके। वह प्रतिदिन माता - पिता के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करते थे और सेवा करने का कोई मौका नहीं छोड़ते थे। नौकरी करते हुए थोड़े से पेसे अपनी जरूरतों के लिए रखकर सब माता पिता के चरणों में भेंट कर देते थे। गुरू महाराज का कोई सेवक वा कर्मचारी माता - पिता को प्रणाम न करे, उन्हें बहुत अधिक दुःख देता था।

हमारी ज़िन्दगी का लक्ष्य यदि उच्च भाव पैदा करना बन जाए तो माता पिता तो क्या सब सम्बन्धों में हमारी नीच गतियां बन्द हो जाएं। जो उपकारी को सताता है, अपने बोल वचनों से उनका अपमान करता है, वह कृत्घन है। गुरू महाराज ने हमें केवल अपने माता - पिता की ही नहीं, दूसरों के माता पिता का भी आदर करना सिखाया है। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने स्कूल के विद्यार्थियों को अपने माता - पिता को उनके उपकारों के पत्र लिखने सिखाये। धर्म का जीवन इन भली क्रियाओं का ही नाम है। सभापति जी ने अपने पिता के गुण वा उपकार बताए।

भाव प्रकाश

श्रीमान जगीर सिंह जी : मेरी माता दीनता वा हमदर्दी की मूर्ति थी। उन्होंने अपने सास ससुर की सेवा अपने माता - पिता की तरह की। मैं माता की कोई क़दर नहीं करता था, इस संगत ने मुझे माता का रूप दिखाया। मेरी माँ का अपनी पुत्र वधुओं के साथ भी बहुत अच्छा सम्बन्ध था। मैं ऐसे महान माता - पिता को प्रणाम करता हूँ। उन्होंने अपने पिता की उनके दादा और भाईयों की सेवा के विषय में बताया। पिता की पवित्रता का ज़िकर किया।

दविन्द्र जी (पत्नी श्रीमान सरताज सिंह जी) : मेरी माता बहुत अमीर घर की थी। उनकी छोटी उम्र में शादी हो गई। जब हम सिरसा आ गए, मेरी माता ने खेतों में भी मेहनत की। काम करते एक बार उनका पैर कट गया, उनकी हार्ट अटैक से मृत्यु हो गई। 6 माह बाद मेरे पिता की भी मृत्यु हो गई। मैं चाहती थी कि मेरे पिता स्कूल न आएं, क्योंकि वह बूढ़े लगते हैं। मेरे पिता ने हमें पढ़ाया, मेरी दादी की बहुत सेवा की। उन्हें धन्यवाद देती हूँ।

श्रीमान गुरूचरण सिंह जी पाहवा : मेरे पिता बहुत सेवाकारी थे। पिता जी पाकिस्तन से ही गुरूद्वारा से जुड़े हुए थे। मैं बुरी संगत में बिगड़ गया था, उनको पहचाना ही नहीं। यहां आकर यह नज़र आता है। काश! मैं अच्छा इन्सान बन सकूं।

बूटा सिंह ने बीड़ी सदा के लिए छोड़ी।

बलबीर सिंह जी ने शराब सदा के लिए छोड़ी।

नवदीप सिंह जी ने मांस 2 महीने के लिए छोड़ा।

देव कर्ण जी :- (सुन्दर लाल जी का पोता) मेरा 14 वर्ष तक पेशाब निकल जाता था। मेरी माता रात को चार चार बार उठकर मेरे कपड़े

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

बदलती थी। पिता जी गाड़ी चलाकर हमारा गुज़ारा करते थे। मैंने ताई जी के बिस्तर पर पेशाब कर दिया था ताई जी ने मेरे कपड़े धोए। मेरी नानी जी ने दवाईयां देकर मुझे ठीक किया। मैं सबका बहुत धन्यवाद करता हूं।

जगदीष दीप :(सुन्दर लाला जी का पोत्रा) मेरी खारिश की बिमारी में बहुत सेवा हुई, मेरी सब इच्छा पूर्ति की। बहुत धन्यवादी हूं।

राज रानी : ने अपने भाई गुरूदेव राज जी के प्यार के लिए धन्यवाद किया।

आखिरी में जिनके माता-पिता हाज़िर थे, सबने उनको हार डालकर प्रणाम किया। हर सभा में हाज़िरी 40 के करीब हो जाती थी। आख़िरी सभा में 60 के करीब हाज़िरी थी। सारा संग्राम सहायकारियों की सहायता से बहुत सफल रहा। आखिर में 4250 रूपये दान प्राप्त हुआ।

बाकि पृष्ठ 17

ऐसे खौफ़नाक दुःख आप पाते और औरों को पहुँचाते हैं कि पशु उस अवस्था में नहीं देखे जाते। तब मनुष्य जन्म पाकर अन्धकार या अविवेकी अवस्था में रहना मनुष्य का सबसे बढ़कर दुर्भाग्य है।

अविवेकी मनुष्य को न तो अपना सच्चा हित और अहित दिखाई देता है और न ही अपना सच्चा हितकर्त्ता और अहितकर्त्ता नज़र आता है। इसीलिए उसकी सब चिन्ता और क्रिया, इसका आकर्षण और विकर्षण, इसकी मित्रता और शत्रुता केवल अपनी नाना प्रकार की सुख मूलक इच्छाओं के पूरा होने और न पूरा होने को लेकर होती है। यदि अविवेकी मनुष्य के सच्चे हितकारी उससे अलग हो जाएं, उससे परे हो जाएं, उससे दूर चले जाएं, उससे कभी न मिलं या उससे उनका सम्बन्ध टूट जाए तो उसे इस बात में अपनी कोई हानि नज़र नहीं आती। और यदि उसे कोई ऐसे जन मिलें कि जो केवल उसकी एक या दूसरी सुख मूलक इच्छा की तृप्ति करते हों, परन्तु उसे जीवन के लिए अत्यन्त हानिकारक प्रमाणित होते हों तो वह ऐसे जनों को केवल यही नहीं कि शत्रु नही जानता, बल्कि उन्हें अपना मित्र समझता है। तब निश्चय ही मनुष्य होकर अविवेकी अवस्था में रहना मनुष्य की सबसे बढ़कर दुर्दशा की अवस्था है।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts